SHIVAJI C

ISSN 2394- 53

printing® Area

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

Principal
Shivaji College, Hingoli
Ta.Dist.Hingoli (MS)

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

39) विवाह के प्रति बदलती अवधारणा एवं आधुनिक हिन्दी उपन्यास एक अध्ययन
प्रा. सुनील एस कांबळे ||165

40) ऐतिहासिक कानून के रूप में सूचना का अधिकार
डॉ० राजीव रौशन, पो०—समस्तीपुर, (बिहार) ||169

41) बागपत जनपद में प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण में शिक्षा के अधिकार ...
डॉ० नवीनता रानी, मोदीनगर ||174

42) आर्थिक विकास एवं पर्यावरण संकट
पी० एल० शाह, डॉ० एम० के० टम्टा, गोपेश्वर (चमोली) ||181

43) हिमालयी राज्यों की जनजातियाँ और राष्ट्रीय सुरक्षा में उनकी भूमिका
डॉ०एम०के०टम्टा, चमोली (उत्तराखण्ड) ||185

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)

ISSN: 2394 5303 | Impact Factor 7.891(IIJIF) | Printing Area® Peer-Reviewed International Journal | September 2021 Issue-80, Vol-02

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

September 2021, Issue-80, Vol-02

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**"

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

संबंधों का मार्गदर्शन करना चाहिए, यही स्वीकार करने में है कि युद्ध अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं का कोई समाधान नहीं है। इनके अनुसार उचित शिक्षा के माध्यम से ही प्रत्येक समुदाय सुदृढ़ एवं समृद्ध हो सकता है। आज विश्व के सामने आतंकवाद एक चुनौती के रूप में है। ऐसे में राष्ट्रीय संघर्षों को दूर करने के लिए यदि टैगोर के विश्वबन्धुत्व की भावना के विचारों को आत्मसात किया जाए तो हम युद्ध तथा हिंसा जैसी प्रवृत्तियों से मुक्त होने में सफल हो सकेंगे।

शिक्षा देश के भविष्य की नींव है और उसे मजबूत करने में कोताही हुई है। शिक्षा में सुधार का कार्य इतना बड़ा था किंतु उसे राष्ट्रीय चुनौती के रूप में स्वीकार नहीं किया गया और उसे जितनी प्राथमिकता मिलनी चाहिए थी उतनी नहीं मिली। आज शिक्षा के क्षेत्र में दिशाहीनता व्याप्त है। युद्ध, हिंसा, मूल्यहीनता और भौतिकवादी आँधी से त्रस्त मानवता को उसके विभिन्न, वर्तमान और अंधकारमय भविष्य में मार्गनिर्देशन करना आशादीप बन सकता है। इनके विचार वर्तमान शिक्षा के दोषों का निवारण करके आदर्श शिक्षा प्रणाली की संरचना में सार्थक योगदान दे सकता है। अतः इनके विचार व प्रयोग आज के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ —

१. अल्तेकर (१९६८) — प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, चौक फाटक, वाराणसी

२. ओड़ एल.के. (२००६) — शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर

३. चौबे, सरयू प्रसाद (१९६३) — भारत के कुछ शिक्षा दार्शनिक, राम नारायण लाल बेनी माधव, इलाहाबाद

४. जयसवाल, सीताराम (१९६७) — शिक्षा दर्शन, पुस्तक प्रकाशन, लखनऊ

५. डॉ. शुक्ला, सी.एस. (२००९) — शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, अनुभव पब्लिसिंग हाउस, इलाहाबाद

६. ठाकुर, रविन्द्रनाथ (२०००) — रवीन्द्रनाथ का शिक्षा दर्शन, अरुण प्रकाशन, दिल्ली

७. लाल, रमन बिहारी (२००७) — शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ

39

विवाह के प्रति बदलती अवधारणा एवं आधुनिक हिन्दी उपन्यास : एक अध्ययन

प्रा. सुनील एस कांबळे

हिंदी विभाग, शिवाजी महाविद्यालय, हिंगोली

संशोधन केंद्र : आदर्श महाविद्यालय, हिंगोली

****

प्रस्तावना :— साहित्य समाज का दर्पण होता है। समाज में घटने वाली घटनाएं व तात्कालिक सामाजिक दृष्टिकोण साहित्य के माध्यम से प्रतिबिंबित होते हैं। प्रस्तुत लेख के माध्यम से विवाह के प्रति बदलते सामाजिक दृष्टिकोण व उसके हिन्दी के उपन्यासों में अभिव्यक्त होने की प्रवृत्ति को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। आधुनिक समाज में विवाह के प्रति युवाओं की मानसिकता बदल रही है। भारतीय दर्शन में विवाह को जन्म—जन्मान्तर का बंधन माना गया है किंतु आधुनिक परिप्रेक्ष्य में ये बंधन अटूट नहीं है। आज के युवा पर व्यक्तिवादी चिंतन हावी है। वह विवाह को भी आत्मिक संबंध न मानकर जीवन की भौतिक उन्नति का एक साधन मानता है। इस प्रकार की मानसिकता न सिर्फ उस युग के जीवन संघर्ष का कारण बनती है अपितु उसके परिवार वालों को भी संघर्ष में डाल देती है। इन बदलते मूल्यों व परिवेश का चित्रण समकालीन उपन्यासकारों ने विभिन्न रूपों में किया है। इस चित्रण में दो बातें प्रमुख रूप से उभर कर आती हैं। प्रथम यह कि कॅरियर विवाह के [illegible] प्राथमिकता पा रहा है और विवाह की अनिवार्यता को स्त्री व पुरुष समान रूप से नकार रहे हैं। दूसरा विवाह को भौतिक साधनों की प्राप्ति को [illegible] [illegible]

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)

Principal
Shivaji College, Hingoli (MS)

लगा है।

आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में प्रमुख रूप से चर्चित गोविन्द मिश्र के उपन्यास पाँच आगनों वाला घर, सुरेन्द्र के चर्चित उपन्यास मुझे चाँद चाहिए, पंकज बिष्ट के उपन्यास पंख वाली नाव और अलका सरावगी के उपन्यास एक ब्रेक के बाद आदि पर विवेचन करने से इस बात की पुष्टि होती है कि आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में विवाह के प्रति बदलती धारणा को पूरी शिद्दत के साथ रेखांकित किया जा रहा है। आधुनिक समाज में दो तरह के द्वंद दिखाई देते है, एक वह है, जो पारंपरिक शैली और विवाह के प्रति धारणाएँ रखता है। दूसरा वर्ग उन परिवारों का है, जो बदलते परिदृश्य और परिवेश में बदलते सोच का परिचायक है।

सामान्यत: विवाह के संबंध में पुरूष अपने निर्णय स्वयं लेता है किंतु नारी के विवाह संबंधी निर्णयों में आज भी परिवार व माता–पिता की राय ही सर्वोपरि होती है। यदि लड़की माता–पिता की राय न माने तो उन दोनों में भी संघर्ष की स्थिति पैदा हो जाती है। आज के युग में पढ़ी–लिखी नारी आर्थिक स्वावलंबन को जीवन का प्रमुख प्रश्न मानती है। पहले की तरह वह विवाह की अनिवार्यता को नहीं स्वीकारती है। यहां तक कि इसके लिए वह परिवार से संघर्ष करने को तैयार है। दरअसल लड़की के लिए विवाह अब जीवन निर्वाह का एक मात्र साधन अथवा विकल्प नहीं है। वह विवाह को जीवन पथ में आने वाला एक महत्वपूर्ण पड़ाव मानती है। ऐसी ही एक नारी वर्षा का चित्रण सुरेंद्र वर्मा ने अपने उपन्यास मुझे चाँद चाहिए में किया है। वह अपने बड़े भाई से कहती है, आयु के जिस मोड पर मै खड़ी हूं उसमे शादी मुझे उतनी महत्वपूर्ण नही लगती जितना अपने पांवो पर खड़े होना लगता है।[1]

जब परिवार में युवा विवाहित संबंधों को सफलता की सीढ़ी के रूप में इस्तेमाल करते हैं तो सबसे अधिक पीड़ा उसके माता–पिता को होती है। उन्हें लगता है कि अभिभावक के रूप में वे विफल हो गए हैं। वे अपने बच्चों को उचित मूल्य व संस्कार नहीं दे पाए हैं। ऐसा ही एक संदर्भ गोविंद मिश्र के उपन्यास पाँच आंगनों वाला घर में है, जहां अमरीका जाकर बसने की लालसावश विद्दू अमरीकी युवती से विवाह करना चाहता है। पिता, पुत्र के इस मूल्यहीन व्यवहार पर सोचता है, वह समय गुजर चुका है, उसमें कुछ अच्छा था ही नहीं और चूंकि गजन उस समय का है, इसलिए वह बेकार है। विवाह और तलाक की ही बात है तो पूछा जा सकता है कि कितने विवाह और कितने तलाक करते फिरोगे, कहीं न कहीं तो टिकने की कोशिश करनी ही पड़ेगी आखिर, तो पहली के साथ क्यों नहीं।[2]

यहाँ पिता गजन युवा पीढ़ी की उस अस्थिरता एवं अपरिपक्वता की ओर इशारा कर रहा है जो मिथ्र तत्कालीन जीवन के लाभ के लिए सोचती है। वह दूरदर्शी बनकर संपूर्ण जीवन के फैसले गंभीरता से नहीं ले पाता है और उसकी यही गलती उसके समग्र जीवन को संघर्षशील बना देती है।

कैरियर को ध्यान में रखकर लिए गए इस प्रकार के निर्णय भावात्मक संघर्ष का कारण भी बनते है ।

युवावस्था में जब शारीरिक शक्ति व मानसिक संवेग अपने चरम पर होते हैं तब विवाह एक अनावश्यक नियंत्रण लग सकता है, किन्तु जीवन के सांध्यकाल में एक साथी की जरूरत सभी महसूस करते है। भौतिक, मानसिक भावात्मक व आत्मिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए विवाह एक सम्मत प्रक्रिया है जो व्यक्ति इन सामाजिक रीतियों का पालन नही करते है, उन्हें इसके दूरगामी परिणाम भोगने पड़ते हैं।

अलका सरावगी के उपन्यास एक ब्रेक के

SHIVAJI COLLEGE LIBRARY HINGOLI

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

बाद का एक पात्र गुरु स्वच्छंद प्रेम में विश्वास कर विवाह नहीं करता। वह कहीं भी टिककर नहीं रहता। उसकी आवारगी व भटकन उसके मानसिक अंतर्द्वन्द अस्थिरता का प्रतीक है। गुरु का मित्र भट्ट गुरु के भविष्य के बारे में चिंतित होकर सोचता है, अंत में तो वह निपट अकेला रह जाएगा. बुढापा बीमारी क्या किसी को छोड़ते है? तब कौन देखेगा उसे? आखिर समाज की रचना और शादी वगैरह नियम सोच–समझकर ही तो बनाए गए है। यह आवारापन अंततः उसे कहाँ ले जाएगा।[3]

विवाह व्यक्ति के कैरियर व विकास में बाधक है यह धारणा सिर्फ नारी में ही नही होती है अपितु कई बार पुरुष भी विवाह को स्वतंत्रता की राह का एक रोड़ा मानने लगता है। आधुनिक युग में जब बिना विवाह किए ही पुरुष को सभी प्रकार के भौतिक सुख हासिल होने लगते हैं तो उसे, विवाह एक अनावश्यक प्रक्रिया नजर आती है। अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लिए वह नारी विरोधी तक बन जाता है। मानसिक रूप से असंतुलित ऐसे ही एक युवा का चित्रण पंकज बिष्ट ने अपने उपन्यास पंखवाली नाव में किया है जहां युवा अविवाहित अनुपम अपने मित्र से कहता है, औरतें जोंक की तरह होती है। जरूरत से ज्यादा अटेंशन मांगती है और जरूरत से ज्यादा अटेंशन आपको देती है। डिपेंडेंस ऐसी कि बिना सहारे के न एक कदम खुद चलेंगी न ही चलने देगी। इट्स मेड माइंड कंट्रोल मैकेनिज्म।[4]

वस्तुतः इस प्रकार के रुग्ण विचार तत्कालिक स्वतंत्रता भले ही दें, व्यक्ति के सर्वांगीण संतुलित विकास के लिए ये अत्यंत घातक हैं। विवाह सिर्फ शारीरिक सुख या संतान प्राप्ति के लिए नही होता है। यह जीवन को एक निश्चित दिशा व प्रभाव देता है जो आत्मिक सुख के साथ–साथ व्यक्ति को सामाजिक रूप से भी संतृप्त व सुखी रखता है।

आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में प्रमुख रूप से चर्चित गोविन्द मिश्र के उपन्यास ''पाँच आंगनों वाला घर'', सुरेन्द्र वर्मा के चर्चित उपन्यास ''मुझे चाँद चाहिए'', पंकज बिष्ट के उपन्यास पंख वाली नाव और अलका सरावगी के उपन्यास एक ब्रेक के बाद आदि पर उपर्युक्त विवेचन से इस बात की पुष्टि होती है कि आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में विवाह के प्रति बदलती धारणा को पूरी शिद्दत के साथ रेखांकित किया जा रहा है। आधुनिक समाज में दो तरह के द्वंद दिखाई देते हैं, एक वह है, जो पारंपरिक शैली और विवाह के प्रति धारणाएँ रखता है। दूसरा वर्ग उन परिवारों का है, जो बदलते परिदृश्य और परिवेश में बदलती सोच का परिचायक है। यह वर्ग विवाह के प्रति प्राचीन धारणाओं को अस्वीकार करता है। अब विवाह के सम्बंध में जो निर्णय परिवार के द्वारा लिए जाते थे, उनके स्थान पर स्वयं पुरुष और महिला दोनों मिलकर आपसी समझ के आधार पर लेने में विश्वास करते हैं। पारंपरिक पद्धति में विश्वास करने वाले आज भी उन्हीं रूढ़ियों से ग्रस्त दिखाई देते हैं, जो परंपरा से चली आ रही हैं। समय–समय पर थोड़ा बहुत बदलाव अवश्य दिखाई देता है, किन्तु धारणाएँ नहीं बदली हैं।

यह वर्ग आधुनिक शिक्षा, सभ्यता और संस्कृति से गहरे तक प्रभावित है। माता और पिता के द्वारा विवाह के प्रति जो धारणाएँ समाज में विद्यमान हैं, वे नई पीढ़ी को स्वीकार नहीं है। वे चाहते हैं कि उन्हें ही पूरा जीवन साथ निभाना है। बेमेल समझौता करना उचित नहीं है, इसलिए आपसी समझ और मानसिक आधार पर आजकल विवाह किए जाते हैं। यह परिवर्तन समाज के लिए उचित और आवश्यक है।

समाज में जो कुछ भी परिवर्तन होते हैं, वे साहित्य में सीधे तौर पर दिखाई देते हैं। आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में विवाह के प्रति बदलती धारणा स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, जो कि उपन्यासकारों के

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

परिवर्तित सोच की परिचायक है। आधुनिक युग में विवाह संस्था के औचित्य पर लगने वाले प्रश्न चिन्ह ही व्यक्ति के संघर्ष का कारण है। विवाह के प्रति अनास्था व्यक्ति के जीवन में अकेलापन व भावात्मक शून्यता भर देती है जो उसके जीवन संघर्ष को बढाती है।

निष्कर्ष :—

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में विवाह के प्रति धारणाएँ बदल रही हैं। वर्तमान समय में जीवन एक संघर्ष जैसा ही हो गया है। इसलिए नब्बे के दशक के बाद भारतीय समाज में तीव्रगामी परिवर्तन आए है। ये परिवर्तन विवाह के प्रति नई पीढी के दृष्टिकोण में भी परिलक्षित हो रहे हैं। इस बदलाव को समकालीन उपन्यासकारो ने विभिन्न रूपो में चित्रित किया है। इस बदलाव ने एक ओर जहां संघर्ष की स्थिति निर्मित की वहीं दूसरी ओर नए वैवाहिक मूल्यों व प्रतिमानों को विकसित करने की जरूरत पर भी प्रकाश डाला। वस्तुत: प्रेम विश्वास, — आत्मीयता व स्थायित्व जेसे मूल्यों को बनाए रखते हुए विवाह के प्रति नवीन उदार दृष्टिकोण विकसित करना ही आज के समय व समाज की जरूरत है जो जीवन संघर्ष को कम कर सकता है।

संदर्भ :

(१) सुरेंद्र वर्मा, मुझे चांद चाहिए, पृष्ठ संख्या ८६

(२) गोविंद मिश्र, पांच आंगनों वाला घर पृष्ठ संख्या २१७.

(३) अलका सरावगी, एक ब्रेक के बाद पृष्ठ १८४

(४) पंकज बिष्ट, पंखवाली नाव, पृष्ठ संख्या ८५

40

ऐतिहासिक कानून के रूप में सूचना का अधिकार

डॉ० राजीव रौशन

सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान वि...

आर०एन०ए०आर० कॉलेज, समस्तीपुर

पो०—समस्तीपुर, (बिहार)

****

शोध—सारांश

भारतीय लोकतंत्र में सूचना का अधिकार ... २००५ नागरिकों के लिए एक ऐतिहासिक ... यह आम नागरिकों को सरकारी नीतियों, ... प्रशासन की कार्य—प्रणालियों से पूर्णत: ... है। यह प्रशासनिक अधिकारियों व कर्म... अपने कार्य के प्रति उत्तरदायी व जवाबदेह ... इस कानून के माध्यम से आम नागरिक ... एकता व अखण्डता एवं सुरक्षा सम्बन्धी ... छोड़कर लोक कल्याणकारी योजनाओं, ... अभिलेखों, दस्तावेजों, आदेशों इत्यादि से ... सूचनाएँ आसानी से प्राप्त कर सकता है। ... होने के बावजूद भी लोगों को बेवजह ... सुरक्षा का हवाला देकर बहुत सारी सूचना... जाती है या जानबूझकर सूचना देने में देरी ... है। केन्द्र सरकार, राज्य सरकार व स्थानीय ... सरकार को प्रशासन पर नकेल कसने को ... है ताकि सूचना के अधिकार के माध्यम से ... शासन पद्धति की स्थापना कर सुशासन ... से बढ़ा जा सके।

की वर्ड— भारतीय लोकतंत्र, आम नागरिक ...

विषय प्रवेश (Introduction)

सूचना का अधिकार अधिनियम ... वास्तव में एक ऐतिहासिक विधान है। ... के लिए बना कानून है, जो सत्ता ...

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)